नवाचार में बाल शोध की भूमिका

– विमला करायत

आज मैं सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में नवाचार अर्थात् दीवार पत्रिका पर अपने व अपने विद्यार्थियों के अनुभवों को इस लेख के माध्यम से साझा कर रही हूं। मैंने देखा कि बच्चे जिज्ञासु और रचनात्मक प्रवृत्ति के होते हैं। हर बच्चे की प्रवृत्ति भिन्न होती है। कुछ बच्चे स्वभाव से बहुत अन्तर्मुखी होते हैं वह जल्दी से अपने मन में उठने वाले सवालों को या अपनी प्रतिभा को सबके सामने व्यक्त नहीं कर पाते। वह सन्न रह जाते हैं। कुछ बच्चे तुरंत प्रतिक्रिया करने वाले होते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि दोनों तरह के बच्चों में किसी तरह की तुलना की जाए। मैंने महसूस किया कि स्कूल में कक्षा–कक्षीय शिक्षण के अलावा बाल सभा और दीवार पत्रिका प्रकाशन एक नियमित प्रक्रिया है जो बच्चों के लिए उपयोगी है। अन्तर्मुखी विद्यार्थियों और सभी विद्यार्थियों के लिए एक अवसर होता है कि वह अपनी रचनाओं और प्रस्तुतियों को साझा करें। नवाचार बच्चों और शिक्षकों के बीच अच्छे रिश्ते कायम करने में मददगार होते हैं। नवाचार शिक्षक और बच्चों के बीच दूरी कम करने और शिक्षण अधिगम में भी अहम भूमिका निभाते हैं।

मैंने अपने कक्षा शिक्षण में इस बात को भी महसूस किया है कि अपनी बात को या शिक्षण अधिगम को अधिक सार्थक व सफल बनाने के लिए हमें बच्चों की तरह सोचना होगा। हमें इस सोच से ऊपर उठना ही होगा कि मैं शिक्षक हूं और ये विद्यार्थी हैं। इन्हें वही सीखना होगा जो मैं इन्हें सिखाऊं। मैंने एक प्रयोग किया अभी कुछ महीने पहले। मुझे महसूस हुआ कि यदि कक्षा में भय रहित और रचनात्मक माहौल बनाना हो तो शिक्षण कार्य शुरू करने से पहले बच्चों से एक बार पूछ लिया जाए कि बच्चों आज आप क्या पढ़ना चाहोगे? जैसे ही मैंने यह प्रश्न किया बच्चे खुशी से झूम उठे और उन्होंने कहानी सुनने की बात कह दी। मैंने एक कहानी ली और बच्चों को सुनाई बच्चे खुश थे। एक जगह पर मैं रुक गई और बोला, बच्चों अब इससे

आगे क्या हुआ होगा? सब एक साथ बोलने लगे। तो मैंने एक सुझाव दिया। कहा कि सभी अपनी कॉपी में लिखेंगे कि आगे क्या हुआ होगा? सबकी कहानी अलग होगी। सब बच्चे लिखने में व्यस्त हो गये। इनमें एक तरह की जिज्ञासा थी, हर कोई अपनी–अपनी कहानी को अपने अंदाज में पूरा करना चाहता था। यह गतिविधि बड़ी मजेदार थी। हमने दो कहानियों पर काम किया। मैंने महसूस किया जब बच्चों को भी निर्णय में शामिल किया जाता है तो वह ध्यानपूर्वक सुनते हैं, रुचि भी लेते हैं।

नवाचार में दीवार पत्रिका बच्चों की रचनात्मकता को उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सभी बच्चे धीरे–धीरे अपने मन की बात, जिज्ञासा, प्रश्नों को शब्दों में ढालते हुए लेख, कविता, कहानी, तथा सुन्दर चित्रों से अभिव्यक्त करने लगे हैं। कक्षा सात का मोहित कुमार बहुत अच्छी कहानी लिखने लगा है। बाल सभा में बच्चे एक घंटे में नाटक तैयार कर लेते हैं। मोहित की कहानियों और नाटक में हमेशा शराब, पुलिस, झगड़े का जिक्र होता है। मैंने और मेरी साथी शिक्षिका ने उससे बात की कि तुम हमेशा शराब और पुलिस की कहानी क्यों

लिखते हो? तो उसका जवाब चौंकाने वाला था। मैम यही सब तो होता है मेरे घर–गांव में। जो भी होता है, वही मैं लिख देता हूं। दीवार पत्रिका निर्माण और बाल सभा के माध्यम से अपने मन के सवालों को मोहित ने अभिव्यक्त किया। बच्चों ने कविता को कहानी और कहानी को कविता के रूप में बदलने का अभ्यास भी किया। कविता और कहानी दोनों पृथक विधाएं अवश्य हैं लेकिन बच्चों के प्रयास और उनकी कल्पना का सम्मान करने से सृजन की गुंजाइश बनी रहती है। ऐसा ही एक और उदाहरण है। कक्षा शिक्षण के दौरान मैंने कक्षा आठ में बच्चों को सिन्ड्रेला की कहानी सुनाई। साथ में मोबाइल फोन पर यूटयूब सर्च करके कहानी का विडियो भी दिखाया। इस वर्ष की अंतिम दीवार पत्रिका में बच्चों ने सिन्ड्रेला की कहानी का काव्य रूपान्तरण किया। तीन बच्चों ने मिलकर इस कविता को लिखा।

सिंड्रेला थी प्यारी राजकुमारी
राजा–रानी की थी बिटिया प्यारी
जितनी थी सूरत प्यारी
सीरत भी पाई उसने न्यारी

इसी तरह बच्चे कहानी को कविता का रूप देते हैं, वह स्वयं की रची कविताओं का पाठ भी बाल सभा में करते हैं। बच्चों ने बहुत से अनुभव भी लिखे हैं। इसी तरह हमने विद्यालय में बाल शोध की प्रक्रिया शुरू की। खोजबीन आधारित इस प्रक्रिया में बच्चे तुरन्त जुड़ने लगे। चार थीम ली गई कक्षा 6, 7, 8 के बच्चों ने क्रमशः हमारे लोकगीत, गांव का इतिहास, पानी कहानी विषय पर काम किया। अपने स्तर पर शोध किया। शुरू में मुझे लगता था कि शोध एक जटिल प्रक्रिया है। कठिन काम है, बच्चे कैसे करेंगे? कर पायेंगे या नहीं? क्योंकि ऐसा काम पहले बच्चों के साथ नहीं हुआ था।

बाल शोध प्रक्रिया में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन ने हमारा सहयोग किया। हमने मिलकर कार्ययोजना बनाई। बच्चों के समूह बनाए। प्रश्नावली निर्माण में बच्चों के साथ मिलकर काम किया। टीम के सदस्य बारी–बारी से तो कभी समूह में बच्चों के साथ बैठते। फिल्म देखना, उस पर चर्चा करना, समुदाय से जानकारी एकत्र करनी थी। तो प्रश्न क्या होंगे? कौन प्रश्न पूछेगा? कौन लिखने का काम करेगा? कौन चित्र आदि बनायेंगे? यह सभी काम समूह में बैठकर किया गया। हर समूह में संतुलन हो इस बात का ध्यान रखा गया। बच्चों को उनकी इच्छा के अनुसार काम चुनने को कहा गया। प्राप्त आंकड़ों को लिखना, उनको जांचना, विश्लेषण और वर्गीकरण के बाद फाइनल आलेख या मॉडल बनाने तक बच्चों ने खूब उत्साह दिखाया।

बाल शोध से ठीक दो दिन पूर्व कक्षा 6 और 7 के तीन बच्चे मेरे पास आए वह खुद को कुछ उपेक्षित सा महसूस सा कर रहे थे। उन्होंने व्यवस्था संबंधी टीम में अपना नाम लिखाया था। लेकिन वह चाहते थे कि कोई मॉडल बनाए। उन्होंने कहा कि वह अपने सपनों के गांव का एक मॉडल बनाना चाहते हैं। मुझे अच्छा लगा, ऐसे बच्चे भी अब आगे आने लगे थे जो बहुत खुलकर अपनी बात नहीं करते थे। इस एक महीने में ऐसा माहौल बना कि सभी बच्चे जुड़ने लगे। मैंने बच्चों से कहा जो भी सामान लगे ऑफिस से ले सकते हैं। बच्चों ने कागज के गत्ते और मिट्टी से अपने सपनों का एक गांव बनाया। खेत, मकान, सोलर लाइट, छोटी नदी, एक नौला, सड़क, स्कूल, अस्पताल, खेल मैदान, डस्टबिन, सभी कुछ तो या उस गांव में। बच्चों की कल्पना में एक सुन्दर सा गांव था। जिसे वह सबके सामने लाना चाहते थे। इस घटना से मुझे एक नई दृष्टि मिली। यदि अवसर मिले तो सभी बच्चों की प्रतिभा निखरकर सामने आ सकती है। स्कूल की और शिक्षक की यही भूमिका है कि बच्चों की प्रतिभा और उनकी कल्पनाओं को आकार दे सकें। उनके सोचने समझने में मदद कर सकें। बच्चे प्रश्न करें, उनकी मौलिकता को स्थान मिले। अवसर देने पर और बातचीत करने से बच्चे बहुत से सवाल करते हैं। जैसे ही उनको यह महसूस होने लगता है कि प्रश्न तो प्रश्न होता है, उसमें खराब या सही सवाल जैसा कुछ नहीं होता। जिज्ञासा होती है तो प्रश्न बनता है, अतः मन में आये प्रश्न को दबाना नहीं चाहिए, तब बच्चे सन्दर्भ समझते हुये बिना झिझक अपनी जिज्ञासा के अनुरूप प्रश्न करते हैं। कई बार मैं भी सभी प्रश्नों के जवाब नहीं दे पाती, लेकिन मैं कहती हूं कि ऐसा कभी नहीं होता कि सारे प्रश्नों के जवाब किसी के पास हो। हम सब मिल–जुलकर सीखने की एक प्रक्रिया में होते हैं। हम मिलकर प्रश्नों के हल खोज सकते हैं। ऐसा नहीं कि शिक्षक ही सब सवालों के हल खोजेगा। धीरे–धीरे हम इस नतीजे पर पहुंचे कि प्रश्न जरूरी है, जवाब तो मिल ही जायेगा। प्रेम से, बातचीत करने से, सम्मान से, वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास से ही शिक्षा में रचनात्मक कार्य सम्भव है ऐसा मुझे लगता है। शायद यहीं से एक बेहतर मानवीय समाज की राह निकलेगी।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय, चौरसों, गरूड़, बागेश्वर में अध्यापिका के पद पर हैं)